



नारिका

वर्ष 2025

अंक - प्रथम

सवारी एवं मालडिब्बा कारखाना लिलुआ की गृह पत्रिका



संरक्षक

यतीश कुमार

मुख्य कारखाना प्रबंधक



प्रधान संपादक

रणजीत कुमार रॉय

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं

उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर

(विनिर्माण)



संपादक

भारत भूषण पाण्डेय,

वरिष्ठ अनुवादक

सह-संपादक

प्रतिमा जे रामटेके

कनिष्ठ अनुवादक

सहयोग

पंकज मंडल एवं पुनम सोनकर,

कनिष्ठ अनुवादक

संपर्क सूत्र

संपादक : हिंदी अनुभाग

सवारी एवं मालडिब्बा कारखाना

पूर्व रेलवे, लिलुआ

फोन - 9433761888, 7003910360

अनुरोध

कारखाना सहित रेल परिवार से संबंधित सभी व्यक्तियों की रचनाओं का स्वागत है। यदि आप कहानी, कविता, लेख एवं संस्मरण, नाटक आदि लिखते हैं तो आप हमें अपनी रचनाएं व्हाट्सएप, ईमेल के जरिए भेज सकते हैं या हिंदी अनुभाग में भी जाकर दे सकते हैं। रचनाएं मौलिक होनी चाहिए।

वर्ष 2024 की उपलब्धियाँ

- श्री अमित कुमार अग्रवाल, पीईडी (पीयू एंड एमई)/रेलवे बोर्ड ने 16.03.2024 को लिलुआ कारखाना का दौरा किया। उन्होंने स्प्रिंग शॉप, एल/एयर ब्रेक सेक्शन, डैम्पर सेक्शन, एलएचबी बोगी शॉप, टैंक सेक्शन का दौरा किया और कोच कंपोनेंट शॉप, एयर ब्रेक सिस्टम पर कंट्रोल आर्म का निरीक्षण किया।
- 8 मार्च, 2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन सवारी एवं मालडिब्बा कारखाना, पूर्व रेलवे/लिलुआ द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुकाप्र/लिलुआ, सीएमएस/लिलुआ और काकाधि/लिलुआ सहित सभी अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान बड़ी संख्या में महिला कर्मचारी उपस्थित थीं। मुकाप्र/लिलुआ ने इस कारखाना की उत्कृष्ट महिला कर्मचारियों और अधिकारियों को आधिकारिक कर्तव्यों के प्रति किए गए अनुकरणीय कार्यों के लिए सम्मानित किया। महिला कर्मचारियों द्वारा भव्यता के साथ एक आकर्षक लघु सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसमें उनके प्रदर्शन में कोई कमी नहीं आई। वर्ष 2024 के लिए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के समग्र उत्सव को पूरे दर्शकों द्वारा विस्तार से सराहा गया है।
- ईआरडब्ल्यूडब्ल्यूओ/लिलुआ ने 15.03.2024 को ऑफिसर्स क्लब, लिलुआ में महिला स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन किया। श्रीमती स्मिता गोयल, माननीय अध्यक्षा, ईआरडब्ल्यूडब्ल्यूओ/एलएलएच ने अन्य सदस्यों के साथ कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई और लिलुआ कारखाना की महिला कर्मचारियों के साथ स्वास्थ्य जांच कार्यक्रम में भाग लिया।
- सवारी एवं मालडिब्बा कारखाना, पूर्व रेलवे/लिलुआ में 20.04.2024 को 'विश्व विरासत दिवस' मनाया गया। इस अवसर पर, न्यू मीटिंग रूम में एक सेमिनार आयोजित किया गया जहां 'आपदाओं और संघर्ष - वेनिस चार्टर के लेंस के माध्यम से' और 'भारतीय और रेलवे विरासत' विषय पर प्रस्तुतियां (पीपीटी) तैयार की गईं। संगोष्ठी में इस कारखाना के कर्मचारियों और कलिम्पोंग कॉलेज के छात्रों और प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जो एक शैक्षिक यात्रा के लिए आए थे। श्री यतीश कुमार, मुकाप्र/लिलुआ ने सभा को संबोधित करते हुए, रेलवे विरासत को संरक्षित करने के महत्व को समझाया और आने वाली पीढ़ियों के लिए विरासत को बनाए रखने के लिए जागरूकता पैदा करने पर जोर दिया।
- सवारी एवं मालडिब्बा कारखाना, पूर्व रेलवे/लिलुआ में दिनांक 08.05.2024 को विश्व कवि रवींद्र नाथ टैगोर की जयंती मनाई गई।
- श्री मिलिंद के देउस्कर, माननीय महाप्रबंधक/पूर्व रेलवे ने पीसीएमई/पूर्व रेलवे और अन्य पीएचओडी, डीआरएम/हावड़ा के साथ 13.06.2024 को सवारी एवं मालडिब्बा कारखाना, पूर्व रेलवे/लिलुआ का दौरा किया। माननीय महाप्रबंधक/पूर्व रेलवे ने ए-शॉप में नए कमीशन किए गए 1.5 मेगावाट सौर ऊर्जा संयंत्र, कम्प्यूटरीकृत डीवी टेस्ट बेंच और जी-शॉप में कम्प्यूटरीकृत बीएमबीसी अनुभाग का उद्घाटन किया। उन्होंने शॉपों का निरीक्षण किया और लिलुआ कारखाना के कर्मचारियों सहित अधिकारियों, एसएसई के साथ चर्चा की

(शेष पृष्ठ 15 पर)

किन्नर

यतीश कुमार
मुख्य कारखाना प्रबंधक
पूर्व रेलवे, लिलुआ



साथ नहीं खा सकता भात
पर चावल के दाने
तुम पर ही फेंकता हूँ

नौ महीने के अविरल प्रेम का
मैं भी पैगाम था
ओलनाल कटने तक
मैं भी इंसान था

अब मैं इंसानों की श्रेणी से इतर
इंसानों को ही आशीषें बाँटता त्रिशंकु हूँ

सर्पमुखों के बीच सोता
अश्वमुखों का वंशज मंगल मुखी हूँ

ब्रह्मा की छाया से निकल
नीलकंठ के विष में घुल गया हूँ मैं

सुख मेरी दहलीज़ में
दाखिल न हो सका
पर मैं तुम्हारे हर सुख में शामिल रहा

मौत मुक्ति है
और
मातम से है मुझे परहेज़

न तो कोई गाँव
न तो कोई शहर
मेरा समूह ही मेरा देश

किन्नौर से संसद का सफ़र
त्रेतायुग से कलयुग का था

समानता का हक़ मिलने पर भी
अवहेलना की नसें जुड़ी रह गईं

और अब भी मैं
समाज की बजाई हुई ताली में
एक चीख मात्र हूँ।



राजा राममोहन राय - एक समाज सुधारक

रणजित कुमार रॉय

उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर (विनिर्माण) एवं

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

पूर्व रेलवे/लिलुआ



आधुनिक भारत के निर्माता राजा राममोहन राय ऐसे बहुआयामी समाजसेवी थे, जिन्होंने अपने दम पर सदियों से रूढ़ियों में जकड़े भारतीय समाज के सुधार के लिए विभिन्न क्षेत्रों में काम किया। तमाम विरोधों की अनदेखी करते हुए राममोहन राय ने सती प्रथा की समाप्ति के लिए संघर्ष किया और तत्कालीन अंग्रेज शासक के सहयोग से इस भयानक प्रथा का अंत करके ही दम लिया।

राजा राममोहन राय ने देश के पिछड़ेपन को महसूस करते हुए समझ लिया था कि आधुनिक शिक्षा खासकर अंग्रेजी, गणित एवं विज्ञान के अभाव में देश का भविष्य अंधकारपूर्ण ही रहेगा। इसके लिए उन्होंने अपने पैसे से कॉलेज शुरू किया जिसमें अंग्रेजी एवं विज्ञान की पढ़ाई होती थी। देश के ऐसे महान सपूत का जन्म बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में 22 मई, 1772 को एक ब्राह्मण परिवार रमाकांत राय के घर हुआ था। बचपन से ही उन्हें ईश्वर पर भरोसा था, लेकिन वे मूर्ति पूजा के विरोधी थे। कम उम्र में ही वह साधु बनना चाहते थे, लेकिन माता का प्रेम इस रास्ते में बाधा बना। राजा राममोहन राय एक प्रखर-प्रगतिशील व्यक्तित्व का नाम है। वे भारतीय भाषायी प्रेम के सही अर्थों में संस्थापक थे। जनजागरण और सामाजिक सुधार आंदोलन के प्रणेता राजा राममोहन राय दूरदृष्टि और गहरी सोच के चिंतक थे।

उन्होंने आंदोलन और पत्रकारिता के कुशल संयोग से दोनों क्षेत्रों को गति प्रदान की। उनके आन्दोलनों ने जहां पत्रकारिता को चमक दी, वहीं उनकी पत्रकारिता ने आन्दोलनों को सही दिशा दिखाने का कार्य किया। राममोहन राय हिन्दी, अंग्रेजी के अलावा फारसी, अरबी, संस्कृत एवं बांग्ला भाषा के भी जानकार थे।

राजा राममोहन राय ने ईस्ट इंडिया कंपनी की नौकरी छोड़कर अपने आपको राष्ट्र सेवा में झोंक दिया। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के अलावा वे दोहरी लड़ाई लड़ रहे थे। उनकी दूसरी लड़ाई अपने ही देश के नागरिकों से थी जो अंधविश्वास और कुरीतियों में जकड़े थे। राजा राममोहन राय ने उन्हें झकझोरने का काम किया। बाल विवाह, सती प्रथा, जातिवाद, कर्मकांड, पर्दा प्रथा आदि का उन्होंने भरपूर विरोध किया।

राजा राममोहन राय के जुझारू और सशक्त व्यक्तित्व का इस बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि सन् 1821 में अंग्रेज जज द्वारा एक भारतीय प्रतापनारायण दास को कोड़े लगाने की सजा दी गई जिसके कारण उसकी मृत्यु हो गई। इस घटना से दुःखी होकर उन्होंने अंग्रेजों की इस बर्बरता का कड़ा विरोध किया था।

राजा राममोहन राय की दूरदर्शिता और वैचारिकता के सैकड़ों उदाहरण इतिहास में दर्ज हैं। वे अंग्रेजी के हिमायती थे लेकिन हिन्दी के प्रति उनका अगाध स्नेह था। वे रूढ़िवाद और कुरीतियों के विरोधी थे, लेकिन संस्कार, परंपरा और राष्ट्र गौरव उनके दिल के करीब थे।

वे स्वतंत्रता चाहते थे लेकिन उनकी सोच थी कि इस देश के नागरिक उसकी कीमत पहचानें। नवजागरण काल के इस प्रणेता को आज का भारत कभी नहीं भुला सकता। वे एक व्यक्ति नहीं विचार थे। कर्म नहीं क्रांति में विश्वास रखते थे। भारत के इस महान सपूत ने अपने द्वारा उठाये गये सामाजिक कार्यों के दायित्व को पूरा किया। 27 सितम्बर 1833 को राजा राममोहन राय की मृत्यु मात्र 61 वर्ष की अल्पायु में ही हो गई। आज जबकि वो हमलोगों के बीच में नहीं है लेकिन उनके द्वारा समाज सुधार के लिए किए गए कार्य आज भी अमर हैं एवं वे हमारे हृदय में हमेशा जीवित रहेंगे।

पर्यावरण प्रदूषण

अश्वनी कुमार
उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर
(बीएमएफ, बजबज)
पूर्व रेलवे, लिलुआ



प्रकृति के विरुद्ध अनियमित कार्य पर्यावरण को नष्ट कर रहे हैं और हमारा पर्यावरण प्रतिकूल हो गया है। प्राकृतिक पर्यावरण की इसी प्रतिकूल परिस्थिति का नाम है पर्यावरण प्रदूषण। पर्यावरण प्रदूषण आज पूरे विश्व के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। ग्लोबल वार्मिंग इसी का जीता-जागता परिणाम है।

पर्यावरण प्रदूषण को साधारणतः दो भागों में बाँटा गया है। प्रथमतः प्राकृतिक प्रदूषण तथा द्वितीय मानव सृजित प्रदूषण। प्राकृतिक प्रदूषण पृथ्वी को उतना नुकसान नहीं पहुंचाते जितना कि मानव सृजित। आज का युग प्लास्टिक का युग है। पर प्लास्टिक को डिकंपोज करना एक कठिन प्रक्रिया है। इन्हें मिट्टी में समाहित होने में वर्षों लग जाते हैं जिसके कारण मिट्टी की उर्वरा शक्ति नष्ट हो रही है। यदि इसे जलाया जाता है तो इससे निकला हुआ धुआँ वायुमंडल को दूषित करता है। मनुष्य विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करने के उद्देश्य से पेड़-पौधों को काटता जा रहा है।

कल-कारखानों एवं वाहनों से निकला हुआ कार्बन मोनो ऑक्साइड, कार्बन डाई ऑक्साइड, सल्फर डाई ऑक्साइड जैसी जहरीली गैस हवा में घुलकर शुद्ध आक्सीजन को दूषित कर रहे हैं जिसके कारण हमें विशुद्ध हवा नहीं मिल पा रही है और हम तरह-तरह की बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। कल-कारखानों से निकलने वाले रसायनयुक्त वर्ज्य पदार्थ, खेतों में प्रयोग होने वाले रासायनिक खाद जल में मिलकर जल को दूषित कर रहे हैं जिसके कारण यह जल जीवन के अनुकूल नहीं रह गया है। आज मिनरल वाटर के पनपते कल-कारखाने इसी का परिणाम हैं। प्लास्टिक, रासायनिक खाद, कीटनाशक दवा एवं वृक्ष कटान से मिट्टी की उर्वरा शक्ति नष्ट हो रही है, मिट्टी का क्षय हो रहा है तथा ऑक्सीजन एवं कार्बनडाई ऑक्साइड का असंतुलन बढ़ रहा है। मशीनों की आवाज, वाहनों की ध्वनि एवं लाउड स्पीकर, पटाखे आदि ध्वनि को प्रदूषित कर रहे हैं।

इस दिशा में रेलवे की भूमिका सराहनीय है। चिमनियों से निकलने वाले धुएँ को रेलवे द्वारा प्रदूषण रहित ट्रीटमेंट करके बाहर छोड़ने की व्यवस्था की गई है ताकि वायु को प्रदूषित होने से बचाया जा सके। बायोडीजल से इंजन चलाने के प्रयास में रेलवे की जमीनों पर महोगनी एवं तरह-तरह के जैविक पौधे लगाए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, जल प्रदूषण को रोकने के लिए कारखानों में वाटर फिल्टरेशन प्लांट स्थापित किए गए हैं। रेलवे के रद्दी मालों (स्क्रेप) की बिक्री प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के प्रमाण-पत्र के आधार पर की जाती है।

हमें नई-नई खोज/आविष्कार करने का पूरा अधिकार है, पर इन आविष्कारों के बीच प्रकृति के नियमों का उल्लंघन नहीं किया जा सकता है। कल-कारखानों को खोलते समय प्रदूषण बोर्ड के नियम जैसे रसायनमुक्त वर्ज्य पदार्थ को समुचित रूप से डिकंपोज करना, दूषित जल एवं वायु का फिल्टरेशन आदि का अनुपालन भी होना जरूरी है। ध्वनि सीमा निर्धारित डेसीबल तक हो। विशेषकर युद्ध को हर हाल में टालना होगा। शक्ति प्रदर्शन के लिए किया गया परमाणु परीक्षण ग्लोबल वार्मिंग का कारण बनता जा रहा है। अकारण ऐसे परीक्षणों को रोकना होगा। प्राकृतिक स्रोतों जैसे कच्ची सामग्री, जल, ईंधन, ऊर्जा आदि का प्रयोग धीरे-धीरे कम करते हुए, जहां तक हो सके इन स्रोतों का पुनरुपयोग करना चाहिए। पर्यावरण संबंधी विधियों, विनियमों और अन्य अपेक्षित मदों का अनुपालन करना चाहिए।

पिता

बच्चों की निश्चल हँसी को संगीत देने वाला साज है,
मुक उनके अधरों को शब्द देता वो उनकी आवाज है।

जब पहली बार उसने अपने मासूम हाथों से खुरदुरी उंगलियों को सहलाया था,
पुरुष होने का गर्व हुआ था जब अपने ही अंश को अपनी गोद में उठाया था।

उनके लिए ज़माने भर की ठोकरें खाता है फिर भी रो नहीं सकता,
पिता जैसा चाहने वाला बच्चों का अपना कोई हो नहीं सकता।

बच्चों की ख्वाहिशों को पर मिले पिता के लिए ये ज्यादा जरूरी है,
उनकी ख्वाहिशों के सामने पिता की जरूरतें रहती हमेशा अधूरी हैं।

नौ महीने तक माँ ने उन्हें अपने गर्भ में संभाला था,
उन दिनों पिता ने भी हजारों खवाबों को अपने मन में पाला था।

वो पिता है सखा है वो उनकी माँ का सुहाग है,
माँ शीतलता है तो पिता घर को ऊर्जा देने वाली आग है।

पिता है तो साहस है पूरे होते बच्चों के हर अरमान हैं,
पिता है तो ताकत है पिता है तो खिलौनों की दुकान है।

पिता अभिमान हैं पिता स्वाभिमान है पिता जहान है,
पिता बच्चों के होंठों पर तैरती जीवन की मुस्कान है।

पूर्णन्दु शेखर सिन्हा
सहायक कल्याण अधिकारी
पूर्व रेलवे, लिलुआ



जब तुम हँसती हो

जब तुम हँसती हो..
शांत सागर में तूफान आ जाता है,
सुप्त जज़्बातों में उफान आ जाता है।

जब तुम हँसती हो..
पगडंडियों पर गुलमोहर के फूल झड़ते हैं,
बेरंग जिंदगी में बेहिसाब अबीर गुलाल उड़ते हैं।

जब तुम हँसती हो..
तुम्हारे गोरे रंग पर और भी निखार आ जाता है,
एक काफिर को भी खुदा पे प्यार आ जाता है।

जब तुम हँसती हो..
एक भटकते हुए पथिक को दिशा मिल जाती है,
उज्ज्वल शुभ चाँद को अंधेरी निशा मिल जाती है।

जब तुम हँसती हो..
मायूस उदास जीवन से बेपनाह मोहब्बत हो जाती है,
हाथ खुद उठ जाते हैं और रब की इबादत हो जाती है।

जब तुम हँसती हो..
बेचैन मदमस्त चाँद को चकोर मिल जाती है,
अलसाते रात के अंधेरे को भोर मिल जाती है।

जब तुम हँसती हो..
वीरान हवेली में एक साथ हजारों चिराग जल जाते हैं,
बोझिल उदास आँखों को हसीन ख्वाब मिल जाते हैं।

जब तुम हँसती हो..
उदास मेरे होंठों को मधुर मुस्कान मिल जाती है,
तुम्हारा अपना होने की पहचान मिल जाती है।

जब तुम हँसती हो..

हिमाचल प्रदेश : एक भ्रमण कथा

सुमन कुमार नियोगी
मुख्य रेडियोग्राफर
पूर्व रेलवे अस्पताल, लिलुआ

पिछले वर्ष मई महीने में मैंने हिमाचल प्रदेश के दो खूबसूरत पर्यटन स्थल, 'डलहौजी और धर्मशाला' का भ्रमण किया था। ये दोनों स्थान हिमाचल प्रदेश के अपूर्व प्राकृतिक सौन्दर्य का दर्शन कराते हैं।

प्राकृतिक सुंदरता और प्रांतीय आकर्षणों के लिए मशहूर है, डलहौजी। डलहौजी शहर की स्थापना सन् 1854 में वायसराय लॉर्ड डलहौजी ने की थी। यह एक शांतिपूर्ण जलवायु और सुहाना मौसम वाला शहर है, जो अंग्रेजों के लिए एक प्रमुख अवकाश स्थल हुआ करता था।

खज्जियार डलहौजी के पास स्थित एक छोटा-सा शहर है जिसे "मिनी स्विट्ज़रलैंड" या भारत का स्विट्ज़रलैंड भी कहा जाता है। इस जगह की खूबसूरती हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करती है। 6500 फीट की ऊंचाई पर स्थित, खज्जियार अपनी प्राकृतिक सुंदरता और सुरक्षा परिदृश्य के कारण डलहौजी के पास घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है। खज्जियार एक छोटी सी झील वाला पठार है जो पर्यटकों की सबसे पसंदीदा जगहों में से एक है। इस स्थान पर होने वाले साहसिक खेल जैसे जोरबिंग, ट्रैकिंग आदि पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

पंचपुला डलहौजी की सबसे खूबसूरत जगहों में से एक है। पंचपुला हरे देवदार के पेड़ों की ओट से घिरा एक झरना है। जो डलहौजी के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। पंचपुला वह स्थान है जहाँ पाँच धाराएँ एक साथ आती हैं। डलहौजी में माल रोड घूमने का अपना अलग ही मजा है। आप अपने पार्टनर के साथ विशेष रूप से शाम के समय माल रोड घूमने की प्लानिंग कर सकते हैं। शाम के समय माल रोड बाजार के रौनक से बेहद जगमगाता है। इसके साथ आप दोपहर में सेंट जॉन चर्च एवं सेंट फ्रांसिस चर्च जा सकते हैं।

आप ट्रैकिंग करते हुए कालाटॉप वन्यजीव अभ्यारण पहुँच सकते हैं। इस जगह की अपनी अलग ही पहचान है और ये जगह लोगों के बीच काफी लोकप्रिय भी है। अगर आप वन्यजीव प्रेमी हैं तो आप यहाँ काले भालू, तीतर, तेंदुआ और हिमालयन स्नो कोक, मार्टेन जैसे जीव-जंतुओं को देख सकते हैं।

चमेरा झील चंबा जिले में स्थित है। चमेरा झील, डलहौजी में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में गिना जाता है क्योंकि यहाँ आप जमकर बोटिंग कर सकते हैं। झील में बोटिंग करते हुए अपने जीवनसाथी के साथ कुछ रोमांटिक समय बिताएं और इस पल को हमेशा के लिए फोन के कैमरे में जरूर कैद कर लें।

सतधारा झरना चंबा घाटी में मौजूद है, जो बर्फ से ढके पहाड़ों और ताजे देवदार के पेड़ों के शानदार नजारों से घिरा हुआ है। सतधारा का अर्थ है, सात झरने और इस झरने का नाम, सात खूबसूरत झरनों के साथ मिलने की वजह से रखा गया है। ये जगह उन लोगों के लिए सबसे खास है जो भीड़-भाड़ वाली जिंदगी से दूर शांति वाली जगह जाना चाहते हैं। डौलकुंड पीक को सिंगिंग हिल के नाम से भी जाना जाता है, जो डलहौजी में समुद्र तल से 2755 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। डलहौजी में सबसे ऊंचा स्थान होने की वजह से यहाँ से आप घाटियों एवं पहाड़ियों के सुंदर दृश्य देख सकते हैं। प्रकृति प्रेमियों के लिए ये जगह स्वर्ग की तरह है।

सुभाष बाउली डलहौजी शहर से 1 कि.मी. की दूरी पर स्थित एक सुंदर पर्यटन स्थल है। यह स्थान सुभाष चंद्र बोस के नाम पर नामांकन किया गया है। उन्होंने डलहौजी में अपने जीवन का कुछ समय बिताया था। अपने

शरीर को स्वस्थ करने के लिए वहाँ का पानी बहुत ही शुद्ध है। नेताजी सुभाष चंद्र बोस के साथ डलहौजी शहर की बहुत कुछ सुनहरी यादें जुड़ी हुई हैं। पहाड़, घाटियाँ, झील, बर्फ, एडवेंचर्स हममें से काफी लोगों को पसंद होता है और अक्सर हमें जब समय मिलता है तो हम उन रास्तों की तरफ निकल पड़ते हैं। धर्मशाला हिमाचल प्रदेश का वो शहर है जहाँ आप इन तमाम चीजों का लुत्फ उठा सकते हैं।

ज्वालाजी मंदिर ज्वालामुखी या ज्वाला देवी के नाम से भी जाना जाता है। ज्वालाजी मंदिर हिमाचल प्रदेश की कांगड़ा घाटी के दक्षिण में 30 कि.मी. और धर्मशाला से 56 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। ज्वालाजी मंदिर हिन्दू देवी ज्वालामुखी को समर्पित है। मैकल्योडगंज से 2 कि.मी. दूर भागसु फ़ॉल्स स्थित है जो धर्मशाला में घूमने की सबसे अच्छी जगहों में से एक है। भागसु फ़ॉल्स हरियाली और प्रकृति के बीच अपने सबसे प्राचीन रूप में स्थापित है जो अपने आप में मनमोहक सौंदर्य एवं शांत वातावरण को समेटे हुए सुंदरता के साथ व्याप्त है। धर्मशाला की राजसी हिमालय पर्वत श्रृंखला की गोद में बसा एक छोटा सा क्रिकेट स्टेडियम है जो समुन्द्र तल से 1457 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह क्रिकेट मैदान दुनिया के सबसे ऊंचे खेल मैदानों में से एक है। वॉर मेमोरियल धर्मशाला में देखने की खास जगहों में से एक है। यह स्मारक शहर के पास देवदार के जंगलों में स्थित है और यह जगह यात्रा करने के लायक है। वॉर मेमोरियल की स्थापना शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए की गई थी। नामग्याल मठ, धर्मशाला के पास पर्यटकों द्वारा सबसे ज्यादा देखी जाने वाली जगहों में से एक है। यह दलाई लामा का निवास स्थान होने के साथ यहाँ पर मंदिर, किताबों की दुकानें, कई दूसरी दुकानें स्थित हैं।

तिब्बती संस्कृति से परिपूर्ण दलाई मंदिर धर्मशाला में एक राजनीतिक, धार्मिक केंद्र है। शांतिपूर्ण ध्यान और धार्मिक प्रार्थना के लिए मंदिर में प्रेयर व्हील या मणि व्हील की माला मौजूद है। दलाईलामा मंदिर बौद्ध धर्म के लोगों के लिए श्रद्धेय तीर्थ स्थल बन गया है। धर्मशाला में कांगड़ा से 32 किलोमीटर की दूरी पर स्थित मसरूर मंदिर एक पुरातात्विक स्थल है जो वर्तमान में एक खंडहर है। यहाँ परिसर में इंडो आर्यन शैली की वास्तुकला में डिजाइन किए गए 15 रॉक कट मंदिरों का एक संयोजन है। त्रियुण्ड मैकल्योडगंज से 9 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह जगह बहुत ऊंचाई पर स्थित है जो मून पीक एक्सपेडीशन पास का शानदार नजारा दिखाती है। यहाँ की स्वच्छता और प्रवीण वातावरण आपका दिल जीत लेगी। डल झील हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में स्थित है जिसका नाम कश्मीर की डल झील से पड़ा है। यह झील हिमाचल प्रदेश के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है। यहाँ के आकर्षण को देखने के लिए दिन भर पर्यटकों और प्रकृति प्रेमियों की भीड़ आती है।

कांगड़ा संग्रहालय तिब्बती और बौद्ध कलाकृति के शानदार, चमत्कार और उनके समृद्ध इतिहास को बताता है, यह धर्मशाला बस स्टेशन के पास स्थित है। इस संग्रहालय में आप कई पुराने गहने, दुर्लभ सिक्के यादगार पेंटिंग, मूर्तियाँ और मिट्टी के बर्तन जैसी चीजें देख सकते हैं, लोग पूरे वर्ष धर्मशाला जा सकते हैं। हालांकि धर्मशाला घूमने का सबसे अच्छा समय बसंत और शुरुआती गर्मियों में होगा। जब तापमान अधिकतम 25 डिग्री सेल्सियस रहता है। डलहौजी और धर्मशाला यह दोनों जगहें हिमाचल प्रदेश के पर्यटन के आकाश पर स्थित दो जगमगाते सितारे हैं।



हमारी दिनचर्या में मोबाईल

विवेक कुमार

पत्रकारिता में स्नातक

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा

व टेक 2, पूर्व रेलवे, लिलुआ

आज से 10-12 साल पहले जो मोबाईल गिने-चुने घरों में मिलते थे, वो आज शहर से गाँव तक हर घर में अपनी उपस्थिति दर्ज करा ली है। लोग घंटों-घंटों तक मोबाईल से चिपके रहते हैं। मोबाईल कामकाज के मामलों में भी लगभग हर क्षेत्र में लोगों का हाथ बंटा रहे हैं जिसके कारण आदमी के जीवन का अहम हिस्सा बन गया है।

अगर मोबाईल के उपयोग की बात करें तो यह निश्चित रूप से कुछ मामलों में सहयोगकर रहे हैं। चाहे बात दुनिया के किसी भी कोने में सम्पर्क साधने की हो या गूगल, यूट्यूब की मदद से कोई जानकारी प्राप्त करने में। एक तरफ सभी आदमी इसका फायदा देख कर ले रहे हैं तो वहीं दूसरी तरफ लेने के बाद, फायदा कम और घाटा ही ज्यादा प्रतीत हो रहा है। आज बच्चे भी इससे अछूते नहीं हैं जिस कारण उसे कई प्रकार की समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। जैसे कि दृष्टि सम्बन्धी समस्याएं, सर दर्द, चिड़चिड़ापन आदि। बच्चे बहुत कम उम्र में ही आज कल गलत संसर्ग में आ जाते हैं। मोबाइल की चकाचौंध वाली दुनिया को देखकर अपने स्तर से ऊपर के कामों व फालतू कामों के दलदल में भी फंस जाते हैं। जिसका सीधा असर उसके बौद्धिक व मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। उसकी बुरी आदतों के प्रति लगातार बढ़ती मानसिकता उसे ले डूबती है।

बच्चों के बाद युवा व जवान भी इसके नशे से खुद को अलग नहीं कर पाते हैं जिससे आये दिन लगातार युवाओं में बैचेनी, गलत आदत, कम समय में अधिक धनवान बन जाना जैसे कई मानसिक रोग का भी शिकार हो रहे हैं, जो आगे आने वाले भविष्य के लिए बहुत बड़ा खतरा बन कर उभर रहा है। समाज आधुनिकता व चकाचौंध में बहुत ज्यादा ही समाते जा रहे हैं। जिसके कारण अपनों के प्रति प्रेम भाव कम और मोबाइल व अन्य गलत आदतों के प्रति ज्यादा अग्रसर हो रहे हैं। आज के युवा अपने कैरियर के प्रति बहुत कम व आधुनिकता व प्रेम-प्रसंगों जैसे मामलों में ज्यादा दिलचस्पी लेते नजर आ रहे हैं जिससे समाज में आये दिन कई तरह की घटना देखने को मिलती है जो भविष्य के लिये बहुत बुरा संकेत है। बस आज जरूरत है हम सबको मोबाईल की काल्पनिक दुनिया से बाहर निकल अपने वास्तविक दुनिया को स्वीकार करने की जिससे सही तरीके से लोगों का बौद्धिक व मानसिक विकास हो सके। आज घर में प्रत्येक सदस्य जिधर देखिये उधर अपने-अपने मोबाईल में व्यस्त दिखते हैं जिससे वे सभी अपनों के बीच आत्मिक संबंध नहीं बना पाते हैं। बच्चे व युवा अपने पूर्वजों के संस्कार व कर्तव्यों (कार्यों) को समझ नहीं पाते हैं। जिस तरह से घर के संबंध में भी खाई ही रहती है। ऐसे ही हालात समाज में भी विद्यमान हैं जिस कारण सामाजिकता, नैतिकता जैसे जरूरी संस्कारों का दम घूंट रहा है। बस सब मोबाईल के पीछे व्यस्त हैं। अगर कोई व्यक्ति बीमार व दुर्घटनाग्रस्त है तो लोग उसकी मदद के बजाय उसका वीडियो बनाकर वायरल करना उचित समझते हैं। किसी के निजी संबंधों को मोबाइल के जरिये कैद कर बदनाम करने की कोशिश करते हैं।

हां, ये ठीक है कि मोबाइल हम लोगों के लिए उपयोग की वस्तु है लेकिन आज इसका ज्यादा दुरुपयोग भी हो रहा है। जिसका प्रभाव घर व समाज के संबंधों में साफ दिखता है। बस जरूरत है मोबाईल की काल्पनिक दुनिया से बाहर निकल कर वास्तविक दुनिया में जीने की। तब समाज, घर व हर इंसान का मानसिक व बौद्धिक विकास सही से हो पाएगा।

रॉकी कुमार आर्य
कारखाना सहायक, एलआरडब्ल्यू
पूर्व रेलवे, लिलुआ

दुख के सौदागर

दुखी व्यक्ति खोजता है
कुछ कुछ अपने जैसा आदमी
वो खोजता है
कौन है जो ठीक उसके जैसा मन ही मन
रोज बिफर बिफर कर मरता है।

वो चाहता है कि
सारे दुख एकजुट हो जाएं
जैसे हाहाकार मच जाने के बाद
ढेर बन जाता है लाशों का,
जैसे भूख को मारकर
बैठ जाते हैं एकजुट होकर लोग धरने पर,
उसी तरह जुटाना चाहता है दुख से भरे लोगों को

ताकि खुश रहने वाले
बेफिक्री लिए दौड़ पाए उन्मुक्त गगन के तले
जहाँ न कोई दुखों का शव हो
और न हो धरने देने वाले दुख के कारिंदे।

“प्रांतीय ईर्ष्या-द्वेष दूर करने में जितनी सहायता
हिन्दी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी चीज से
नहीं।”

सुभाषचन्द्र बोस

स्वच्छ मृत्यु की लालसा

मैं ढूँढता हूँ,
सबसे गहरा सन्नाटा
इतना कि, वो शोर को भी चीरने की शक्ति
रखता हो

और जो अंधेरे की तासीर से मिलकर
अपनी भंगिमा और गहरा कर ले,
और सुनाई दे उस महुआ की आवाज़
जो मंद-मंद कानों के गलियों को रसपान कराये।

मैं ढूँढता हूँ,
हवा की हल्की परत, सबसे हल्की परत !
जिसके बहाव में
उन सारे खुशबू का प्रवाह हो,
जो आता है निर्वातसे
मन की गहराईयों तक ठंडक देने को।

मैं ढूँढता हूँ, कि
मिल जाये ये सब मुझे
मरने के ठीक पहले एक छोटी-सी उम्र के लिए,
जिसे जीकर मन की सारी खटास
मिठास का अंश होने को आ जाए।
जिसे समेट कर, विकार के सारे काले दाने
बिखेर सकूँ।

और बची रहे एक स्वचा मृत्यु की
लालसा
सदैव के लिए।

हमारी हिंदी

रविकांत चौधरी

तकनीशियन-I/लिलुआ

हिंदी प्रेम है, विश्वास है

हर्ष है, उल्लास है

हर जीवन की आस है हमारी हिंदी

हिंदी गीत है, संगीत है

हर हृदय की मनमीत है हमारी हिंदी

हिंदी राग है, अनुराग है,

आदर है, संस्कार है,

जीवन का आधार है हमारी हिंदी

हिंदी रंग है, रूप है

काल है, चक्र है

आसमान में तेज चमकती धूप है हमारी हिंदी

हिंदी मान है, सम्मान है

पूर्वजों का गान है, वीरता का बखान है हमारी हिंदी

हिंदी शाप है, वरदान है,

वेदना है, संवेदना है

मृत शरीर की चेतना है हमारी हिंदी

हिंदी भूत है, भविष्य है

वर्तमान है, युगों-युगों की पहचान है हमारी हिंदी

हिंदी रामायण है, गीता है

वेद है, पुराण है

उपनिषद् है, महाभारत का सार है हमारी हिन्दी ।

हिंदी लाज है, लिहाज है

माथे का मुकुट, सिर का ताज है हमारी हिंदी ।

हिंदी पुन्य है, अति पावन है

सब भाषाओं का संगम है हमारी हिन्दी

हिंदी जननी है, हमारी जान है

मां की ममता है, हमारा अभिमान है हमारी हिंदी

हिंदी सूर्य का प्रकाश है, चंद्रमा की शीतलता है

ग्रहों की चाल है, सम्पूर्ण विशाल ब्रह्माण्ड है हमारी हिंदी

हिंदी का न तो कोई धर्म है, और न तो कोई जाति है
हिंदी तो हमें केवल मानवता ही सिखाती है

कुछ छूट गया

कल जब मैं घर से आ रहा था ।

मां ने मुझ से पूछा,

कुछ छूटा तो नहीं,

मन ही मन मैं बोला

सब तो कुछ यहीं रह गया मां

मेरा बचपन, वो बेफिक्री,

वो मस्ती, मेरा स्वतंत्र होकर घूमना

दोस्तों का साथ, गांव की पगडंडियां

और रह गया तेरे हाथों का स्वाद ।

और रह गया मां तेरा प्यार-दुलार,

ममता की बौछार

पापा की डांट-फटकार

अपनों का प्यार

सब कुछ तो यहीं रह गया ।

और साथ ले गया घर का कर्ज,

घर की जिम्मेदारी,

भाईयों का भविष्य

और तुम सब की यादें ।

घर की जिम्मेदारियों ने

परदेशी बना दिया,

कैसे कहूं मां, घर की जरूरतों

ने मुसाफिर बना दिया ।

समय की धारा

गोपाल कुमार
वरिष्ठ एसओ
पूर्व रेलवे, लिलुआ

समय की प्रबल धारा में
यह चाह कि मैं स्थिर रहूँ
दुनियादारी की चाल में
रखूँ खुद को किस हाल में।

जब भी राष्ट्रीयता की बात चलती
धर्म-देश पर द्वन्द्व चलती।
इतिहास बदलने से पहले
हम काश इतिहास से सीख पाते।

शिक्षा, नव-चेतन और नई तकनीक की
बाट जोहते हर चौखट
बिन धार्मिक पहचान के हम खोजते जैसे
चिकित्सा और शिक्षण संस्थान।

इसी सोच के साथ बढ़े तो देश क्या विदेश भी
गंगा-जमुनी तहजीब की देखेंगे झलक।
राजनीति में भी जातिगत भाव से
जिस दिन उठ जाए सभी

हम सटीक समय में जन्म लिए हैं
इस भाव के साथ ठहरें हम
इसी क्षण ऐसा नींव रखें कि
हिल न पाए युगयुगांत।

हवा की कीमत

अनन्या कुमारी
पुत्री- श्री गोपाल कुमार
वरिष्ठ एसओ, पूर्व रेलवे, लिलुआ

हवा की कीमत समझो, हवा ही हमारी जिंदगी है।
पेड़-पौधे हवा को स्वच्छ करते हैं,
जिसे हम अपने सुविधा के लिए काट गिराते हैं।

पर हम ये नहीं समझते हैं
कि हवा ही हमारा जीवन है।
स्वच्छ हवा के लिए हमें
अधिक पेड़ भी लगाना चाहिए।

बिन हवा के
ये धरती कुछ भी नहीं है।
बिन हवा के
हम एक दिन भी
जीवित नहीं रह सकते हैं।

हवा हमें मुफ्त में मिलती है
अगर ये हवा
हमें पैसों में मिलती
तो सबको इसकी कीमत
समझ में आती।

हवा बहुत कीमती है।
बिन हवा हम कुछ भी नहीं।
हम भी एक कट-पुतली होते अगर हवा ना होती

ज़िन्दगी

चन्दन भगत
कार्यालय अधीक्षक
सामान्य अनुभाग
पूर्व रेलवे, लिलुआ

ऐ ज़िन्दगी मत हो उदास,
ये बुरा वक्त जो है तेरे आस पास,
रख हौसला एक दिन ये पल,
गुजर जायेगा, गुजर जाएगा।

पेड़ों की सूखी टहनियाँ
कुछ कुंठित कंकाल सी,
अपनों को खोने के गम में
गुमसुम खड़ी, बदहाल सी,
पर मत खोना तू आस,
समय के साथ
तेरा रूप-यौवन फिर एक दिन
निखर जायेगा, निखर जायेगा

रात का स्याह अंधेरा,
अपने सन्नाटों से डराता है,
फिर चुपके से दबे पाँव
सुबह आती है।
रात के मुँह पर तमाचा जड़कर,
नई उम्मीदों और तरंगों की बाँहे पकड़कर।
पर मत डरना तुम गम के अंधेरों से,
तेरी किस्मत भी एक दिन
संवर जायेगी, संवर जाएगी।

ये साँसे नहीं धरोहर किसी की,
मौत आती है वक्त पर एक दिन सभी की,
समय का चक्र है चलता रहेगा,
सूर्य अस्त और निकलता रहेगा,
अन्त में जीवन की लड़ियाँ एक दिन सभी की
बिखर जाएगी, बिखर जाएगी।

धीरज

पंकज मण्डल
कनिष्ठ अनुवादक
पूर्व रेलवे, लिलुआ

धीरज की भी
सीमाएँ होती हैं,
बांधकर रखना।
पर इतनी ही
बांध कर रखना
कि दूसरे
तुम्हारी सीमाओं को
लांघ न पायें।
और
तुम जब चाहो
अपनी सीमाओं के
बांध तोड़ सको।
फिर
विप्लव की चिंता मत करना।

इश्क में नाचेंगे

रवि कुमार

एमशॉप, टिकट संख्या:-एम-1802
कैरेज एंड वैगन वर्कशॉप, पूर्व रेलवे, लिलुआ

नाचना कला है अथवा अपनी ही धुरी पर तीन सौ साठ डिग्री घूमने का विज्ञान, कहना मुश्किल है। इश्क में नाचना जरूरी तब होता है जब नचाने वाले की उंगली पर नाचा जाए वरना रूप सौंदर्य के रस बोध हेतु ऋषि महर्षि अपना नकली चोला उतार कर ता ता थैया नाच लेते हैं।

जब से स्मार्टफोन हाथों में आया है बात समझ में नहीं आ रही है कि स्मार्टफोन लोगों को नचा रहा है अथवा लोग स्मार्टफोन को। स्मार्टफोन में नाचने का चलन ऐसा चला है मानो हर घर ने ठान लिया है कि हम एक न एक दिन नाचने में अथवा दुश्मन को नाच नाचने में अव्वल होंगे। जिन घरों की बहुएं बिन घूँघट में बाहर पैर तक नहीं रखती वह भी सोशल मीडिया के अति सोशल लोगों के मध्य एक क्लिक में ही नाच उठती है।

हम जानते हैं जब से बसंती को कुत्तों के सामने नाचने को मना किया गया है वह संभल गई है समय और जगह देखकर नाचती है, किंतु इन कुत्तों का क्या, कुत्ते तो कुत्ते ठहरे वे तो बसंती के सामने नाच ही सकते हैं। वायरल होने का बुखार, वायरल बुखार से कई गुना ज्यादा प्रभावी होता है। नाचने का चस्का एक बार लग जाए तो पारा सिटामोल अथवा कोई एंटीबायोटिक किसी काम की नहीं..।

एक बार तो एक युवती कैमरा मैन को लेकर शमशान में नाचने लगी वह सोची थोड़े कपड़े भी कम कर लेती हूँ। यहां कौन देख रहा है भला। सब तो दाल रोटी के चक्कर में जीवन भर नाच नाच कर चौर निद्रा में सो गए हैं। ऐन वक्त पर गड़े मुर्दे उखाड़ने वालों की टीम ने धावा बोल दिया और उसे वायरल कर दिया। तब से वह सेलिब्रिटी कही जाती है। युवती ने अपने संभ्रांत घर के प्रतिष्ठा संपन्न लोगों को नाच नचा कर रख दिया है। वह कहती है नाचना हमारा पैशन है और नचाना हुनर। कोई कहता है नचाने वाला ऊपर बैठा है एक इशारा करता है और साधु संत तक नाच उठते हैं। कोई कहता है नचाने वाला नीचे बैठा है कुर्सियों पर बैठे-बैठे पैसे फेंक रहा है और हम नाच रहे हैं। कोई कहता है जब दुनिया नाच रही है तो हम ना नाच कर भी नाच रहे हैं। प्रेम की रास हो तो मन नाचता है और फेम की आस हो तो नग्न, अर्धनग्न तन नाचता है।

कुल की मान को त्याग मीराबाई घुंघरू बांध कर नाचती है और हम तो बिन घुंघरू के ही। पहले किसी अवसर पर लौंडा का नाच होता था, पुरुष स्त्री का रूपक बनता था। अगर किसी स्त्री की नजर पड़ जाए तो वह दांतों तले उंगली दबा लेती थी। अब दांतों तले उंगली दबाने का कार्य पुरुषों के हिस्से ही है। स्त्रियां प्रत्येक कार्य में पुरुषों का कंधा से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। किंतु नाचने और नाच नचाने में कई स्त्रियां पुरुषों से आगे देखी जा सकती हैं..। पुरुष चाहे ऑफिस जाने को तैयार हो अथवा क्लब जाने को स्त्री की एक तिरछी नजर पर वह भांगड़ा करने लगता है। इस तरह कई स्त्रियों ने दहेज प्रथा खत्म करने और प्रेम विवाह का संकल्प लिया है क्योंकि जो पुरुष स्त्री के इशारे पर नाचता है वह शादी क्यों न कर सकेगा भला।

अगर पुरुष ना नाचे तो स्त्रियों का सीधा आरोप होता है 'नाच न जाने आंगन टेढ़ा'। अब आंगन टेढ़ा हो अथवा सिधा पुरुषों को तो घर के सुख सुविधा के लिए घर से बाहर ही नाचना पड़ता है। जो खबर पहले सूत्रों अथवा अज्ञात सूत्रों के हवाले से आई थी वह अब सीधे सोशल मीडिया के छन्नी से छन कर आ रही है कि एक फिल्मी नृत्यांगना 'साहित्य आज तक' में पहुंच गई है। निश्चय ही साहित्य का उद्धार होने वाला है और साहित्य को जन-जन तक सुलभ कराने वाली गाड़ी आउटर पर खड़ी है।

वर्ष 2024 की उपलब्धियाँ (पृष्ठ 2 का शेषांश)

और उन्हें भारतीय रेलवे के लिए उनकी समर्पित सेवा के लिए प्रोत्साहित किया।

- 26.06.2024 को लिलुआ कारखाना द्वारा अग्नि सुरक्षा पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर रेलवे बोर्ड के श्री अमित कुमार अग्रवाल, एएम(एमई)/रेलवे बोर्ड, श्री एसपी सिंह, पीसीएमई/पूर्व रेलवे, श्री एस सिंकू पीसीएमई/एसईआर, सीआरएसई/ईआर और सीआरएसई/एसईआर भी उपस्थित थे। उन्होंने शॉपों, एफडीएसएस और एफडीबीए परीक्षण प्रयोगशाला का दौरा किया।
- इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त 2024 को सवारी एवं मालडिब्बा कारखाना, पूर्व रेलवे/लिलुआ में शानदार तरीके से मनाया गया। श्री यतीश कुमार, मुकाप्र/लिलुआ ने श्रीमती स्मिता गोयल, अध्यक्ष/ ईआरडब्ल्यूडब्ल्यूओ/ लिलुआ, सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की उपस्थिति में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराया।
- श्री सुमित सरकार, सहायक महाप्रबंधक/पूर्व रेलवे ने 29.08.2024 को सवारी एवं मालडिब्बा कारखाना, पूर्व रेलवे/लिलुआ का दौरा किया। उन्होंने सुरक्षा नियंत्रण कक्ष का उद्घाटन किया और वेल्डिंग ऐप प्रदर्शन, टैंक अनुभाग, शौचालय उन्नयन, एसी राज सेक्शन के तहत ईपीपीएफएस/एफडीएस लैब, एचओजी टेस्ट बेंच, मिनी पेंट्री फिटमेंट, व्हील शॉप, वंदे भारत बोगी असेंबली ऑफ लिफ्टिंग बे शॉप, वाटर बूथ, एल/एयर ब्रेक सेक्शन, ऑल वीमेन सेक्शन, क्रेच, सीटीआरबी सेक्शन, ब्रेक सिलेंडर सेक्शन, डैम्पर सेक्शन, यार्ड का निरीक्षण किया।
- इस वर्ष विश्वकर्मा पूजा 17 सितंबर 2024 को सवारी एवं मालडिब्बा कारखाना, पूर्व रेलवे/लिलुआ में एकीकृतरूप से मनाया गया।
- सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024 के दौरान राजभाषा विभाग लिलुआ द्वारा दिनांक 30.09.2024 को लिलुआ कारखाना के नए सभागार में “सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि” विषय पर हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई।
- स्वच्छता पखवाड़ा- 2024 के अवसर पर दिनांक 01.10.2024 को हिंदी नुक्कड़ नाटक का मंचन किया गया।
- दिनांक 28.10.2024 को फ्लोरेंस डे स्कूल/लिलुआ प्रेक्षागृह में हिंदी पखवाड़ा-2024 समापन समारोह के रूप में मनाया गया। जिसके दौरान एक भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में 30.10.2024 को सवारी एवं मालडिब्बा कारखाना, पूर्व रेलवे/लिलुआ में मनाई गई है।
- इस वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2024 अभियान 16 अगस्त 2024 से 15 नवंबर तक मनाया गया है। इस अभियान के तहत क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम, संगोष्ठी, नुक्कड़ नाटक, अखंडता शपथ, वाद-विवाद प्रतियोगिता जैसी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया।
- जनजातीय गौरव दिवस - 2024 के अवसर पर लिलुआ कारखाना में दिनांक 25.11.2024 को “भारतीय स्वाधीनता संग्राम में स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान” विषय पर एक वाक् प्रतियोगिता आयोजित की गयी।
- भारत के संविधान को अपनाने के उपलक्ष्य में, 26.11.2024 को सवारी एवं मालडिब्बा कारखाना, पूर्व रेलवे/लिलुआ में भारतीय संविधान की प्रस्तावना पढ़कर संविधान दिवस मनाया गया, जिसमें सभी अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित थे।
- इस वर्ष विश्व ध्यान दिवस 21.12.2024 को ऑफिसर्स क्लब में सवारी एवं मालडिब्बा कारखाना, पूर्व रेलवे/लिलुआ द्वारा प्रख्यात योग और ध्यान गुरु श्री सुब्रत साहा के मार्गदर्शन में उचित तरीके से मनाया गया।



गणतंत्र दिवस समारोह 2024



सुप्रसिद्ध लेखिका एवं रचनाकार महाश्वेता देवी
की जयंती (30.01.2024)

महिला स्वास्थ्य जागरुकता अभियान (15.03.2024)



अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2024 समारोह, (08.03.2024)



विश्व कविता दिवस का आयोजन (21.03.2024)



काराकास की बैठक एवं पुरस्कार वितरण (02.04.2024)



विश्व विरासत दिवस समारोह (20.04.2024)



रवीन्द्र संगीत एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन (08.05.2024)



पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण



पर्यावरण दिवस पर हिंदी नुक्कड़ नाटक



सुरक्षा सेमिनार आयोजन (26.06.2024)



विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएं (जून 2024)



लिलुआ भंडार में दो दिवसीय हिन्दी कार्यशाला
(20 एवं 21.06.2024)



अंतरराष्ट्रीय योग दिवस



दिव्यांगजन कर्मचारियों के लिए ई-रिक्शा सेवा की
शुरुआत (29.06.2024)



काराकास की त्रैमासिक बैठक एवं पुरस्कार वितरण
(26.07.2024)



वित्तीय साक्षरता एवं जागरूकता कार्यक्रम (06.08.2024)



78वां स्वतंत्रता दिवस समारोह एवं राजभाषा पुरस्कार वितरण



हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा का शुभारम्भ



विश्वकर्मा पूजा का आयोजन (17.09.2024)



सतर्कता जागरुकता सप्ताह पर हिंदी नुक्कड़ नाटक



लिलुआ कारखाना भोजनालय का नवीनीकरण और उद्घाटन समारोह



स्वच्छता ही सेवा सप्ताह पालन (17.09.2024)



हिंदी पखवाड़ा पुस्तक समीक्षा लेखन प्रतियोगिता



हिंदी पखवाड़ा राजभाषा क्विज प्रतियोगिता (24.09.2024)



स्वच्छता पखवाड़ा पर हिंदी नुक्कड़ नाटक (01.10.2024)



जनजातीय गौरव दिवस पर निबंध प्रतियोगिता (25.11.2024)

महाप्रबंधक, पूर्व रेलवे द्वारा लिलुआ कारखाना के कर्मचारीगण पुरस्कार प्राप्त करते हुए



हिंदी प्रतियोगिताओं में पुरस्कार ग्रहण करते हुए



हिंदी नाट्य प्रतियोगिता में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु